Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

* सुधा बिन्दु *

अर्थात्

श्री सीतारामचन्द्र युगल स्वरूप का
ध्यान और स्तोत्र पद्य मे तथा
उसका अर्थ स्पष्ट भाषा
में लिखे गये हैं

जिसको
पाटलीपुत्र नाम नगर निवासी मिश्रोपाह्व
पण्डितवर श्री अयोध्याप्रसाद ने
उपासक के रीति से लिखकर
प्रकाश किया

पं० नन्द प्रसाद मिश्र द्वारा मुद्रित
लक्ष्मी प्रेस--गया
१९०६

द्वितीय वार] [१०३० प्रति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6530. Price R. 1/1/—

विशेष ध्यान।

"बिकराल प्लेग रूप व्याघ्र" के पंजो से बचाने का घृत जो आयुर्वेदीय प्रयोग से प्रस्तुत हुआ है तीन वर्ष से वितरण हो रहा है इसके सेवन से बहुत रोगी आराम होरहे हैं कोई परोपकारी यशाभिलाषी प्लेग के रोगी को देने के निमित्त लिया चाहें तो हमारे पास पत्र व्यवहार करें उचित मूल्य से "बेलू-पेबुल" पार्सल द्वारा उनको प्राप्त होगा। सेवन की विधि घृत के साथ रहती है।

ज्वरनाशक "हरितचूर्ण"

इस चूर्ण के सेवन करने से तरुण, जीर्ण और विषमादिक सब प्रकार के ज्वर अवश्य छूट जाते हैं सेवन की विधि और मूल्य पुरिआ पर लिखे हैं।

आनन्दी प्रसाद मिश्र

पीपरपांती--गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ श्री रामचन्द्रे ॥

* सुधा बिन्दु स्तोत्र *

* सार्दूल विक्रीड़ित छन्दः *

काश्मीर द्रव शोभि भाल पटलं नासाग्र मुक्ता फलम्। ताम्बूलो धर पल्लवं रति करं कन्दर्प दर्पापहम् सीता कन्धर सव्य कोमल करं माधूर्य्य लोलालयम्। वन्दे छत्र किरीट चामर युतं प्रेम प्रियं राघवम् ॥ १ ।

अर्थ ।

प्रेमही से प्रसन्न होने वाले श्री राम चन्द्र को नमस्कार करता हूँ जिनके ललाट पटल मे केसर का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिलक शोभित है पान की बीड़ी चाभ रहे हैं उसका रंग होठों पर ठहर कर दर्शक के हृदय में प्रेम का तरंग उठारहा है और काम के मान को मर्दन कर रहा है।

अशोक वाटिका के मध्य कल्प वृक्ष के मूल में रत्न जटित बृहन्मण्डप के मध्य अष्ट दल कमलाकार रत्न सिहासन है उसके मध्य कर्णिका पर जुगल मूर्त्ति श्री जानकी रघुनन्दन परस्पर अँस पर कोमल कर समर्प्पण किये विराजते हैं मानो श्याम गौर मेघ तड़ित से माधूर्य्य रस की वृष्टि हो रही है। अनन्त सूर्य्य के प्रकाश को ह्रास कर्त्ता मनोहर ज्योति मय रत्न भूषण भूषित जुगल स्वरूप के पीछे के पखरी पर प्रेम रस भरी एक सहचरी श्वेत मणि मय छत्र धारण करि खड़ी हैं। उनके दोनो ओर दो सहचरी खड़ी पंखा झल रही हैं। उनकेपरे के दोनों पत्तों पर खड़ी दो सुन्दरी चंवर ढारती हैं उन्के परे दो सहेली पान दान लिये खड़ी हैं और सन्मुख के पत्र पर खड़ी गौरांगी दंपति को इतर देरही हैं ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूल

गौराङ्गी प्रिय नील कञ्चुक धरां ताम्बुल रागा धराम् विद्युद्भांशुकशोभितां शशि मुखीं कञ्जाभ नेत्रांवराम् ॥ कान्तां साप्पित भूषणान्वितकरां प्राणेश वाम स्थिताम्। वन्दे तां हरि शम्भु सेवित पदां रासेश्वरीं जानकीम् ॥ २ ॥

अर्थ।

रासक्रीडा की स्वामिनी प्राण पति श्री राम चन्द्र के वाम भाग मे शोभित ब्रह्मा और शिवादि देवतागण से सेवित श्री जनक नन्दनी के चरण कमल को प्रणाम करता हूं। गोरी गात श्री जानकी अपने प्रिय तम के रंग की सी नीला रंग की प्यारी कञ्चुकी धारण किये हैं पान का रंग होठों पर शोभित है वस्त्र धारन किये हैं सो विजुली के सदृश चमक रही है चन्द्र वदनी श्री जनक लली के दोनो नेत्र कमल के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूल की पखरी के समान शोभित हैं रत्न मय भूषण से भूषित दहिना कर प्यारे के कन्धे पर अर्पित है ॥२॥

* मूल सुग्धरा छन्द *

ब्रह्माद्या देव संघाः हिम गिरि तनयाः सारदाल्हादिनीमा । लीला देवी च भूः श्रीः श्रुति रपि सततं सुस्वरैर्ब्वा ङ्मनोभि र्दिव्यैः स्तोत्रैः परेशम् भव भय हरणं श्री निकेतं शरण्यं । वन्दन्ते यं सदा तं प्रणत मुद करं भावनी यंहि वन्दे ॥ ३ ॥

अर्थ

जो श्री जानकी वल्लभ राम चन्द्र सब के स्वामी संसार का जन्म मरण रूप दुःख का नाश करने वाले शोभाय मान स्वरूप शरण ग्रहण करने योग्य हैं वही दशरथ नन्दन श्री राम चन्द्र को ब्रह्मादिक देवता ओं का समूह हिम पर्वत की पुत्री श्री पार्वती, सरस्वती,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आह्लादिनी शक्ती, लक्ष्मी, लीलादेवी, भूदेवी, श्री देवी और श्रुति सब भी मन लगा कर सुन्दर स्वर और वचन से दिव्य २ स्तोत्रों को पढ़कर सदाहि विनय करते रहते हैं उसी शरण प्राप्त जीव का रक्षक ध्यान करने योग्य दिव्य स्वरूप को मैं प्रणाम करता हूँ ३

मूल

श्री सीतां स्वर्ण वर्णां कल कमलकरां शील शोभासनेवां । स्वाधोनाह्लादरूपां वह्नु सुर वनिता बन्दितां ध्यूं बुजाताम् ॥ विद्युद्भां रत्न भूषां जनगण सुख दावर्षिणीं मेघ मालां सर्गस्थित्यंतमूलां भवजभयहरां श्री विधात्रीं हि वन्दे ॥४॥

अर्थ

रासस्थान को शोभित करनेवाली सुवर्ण के समान गौरांगी जनक नन्दिनी श्रीसीता को नमस्कार करता हूँ । प्रफुल्लित कमल का पुष्प जिनके हाथों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में शोभीत हैं शीलयुत नेत्रों में शोभा भर रहे हैं आनन्द कारक कोइ वस्तु से आनन्दित नहीं हो सक्ती हैं स्वय आनन्द रूपा हैं। श्रीदेवी प्रभृति सब देवांगना जिनके चरण कमल की सेवा करती रहती हैं। विजुली के तड़प सा प्रकाशमान रत्न की निर्म्मित भूषणों से सब अंग भूषित हैं सेवक गण का सुखरूप जल को वृष्टि करने के लिये तो मेघमालाही हैं संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार होने की कारण रूपा हैं (अर्थात् ब्रह्मादि इश्वर को वह तीनो अधिकार की सत्ता देनेवाली एही हैं) और शरण प्राप्त जीव का (जन्म मरण रूप) संसार का भय हरने वाली हैं। ॥४॥

मूल चामर छन्दः।

गहे सुवर्ण सँज के प्रभामये सुखासने रमादि तुल्य नागरो भिरर्च्चितौ प्रियाप्रियौ। चकोर चन्द्रिकैव चक्षुषास्यसोमसोमपा न तत्परौ परस्परा ति मोदितौ नमामितौ ॥५॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थ

सुवर्ण नामक गृह (अर्थात् कनक भवन) में सूर्य्य के समान प्रकाशमान रत्न निर्म्मित सुखद सिंहासन पर महा लक्ष्मी आदि देवियों के सदृश नागरी गण से सेवित प्रिया प्रियतम श्रीजानकी रघुनन्दन विराज मान हैं । दोनो स्वरूप अपने २ नेत्र चकोर से मुख चन्द्र की शोभारूप अमृत के पान में तत्पर हैं परमानन्द निमग्न वही दम्पति को प्रणाम करता हूँ ॥५॥

मूल बसन्त तिलक छन्द ।

आनन्द चिन्मयतनू करुणाब्धिरूपौ पूर्णौ परौ स्थिर तडिद्घनभासमानौ । द्वाबेक तत्व मपि दम्पति भाव भाजौ बन्देधु वौ करण निर्बिषयस्वरूपौ ॥६॥

अर्थ

स्थूल देह के मन आदि इन्द्रियों के भोग से अर्थात् मन से प्रभु के स्वरूप का मनन, नेत्र से दर्शन, कान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से उनके वचन का श्रवण इत्यादि इन्द्रियों के भोग से पृथक् नित्य स्वरूप श्रीजानकी रघुनन्दन को प्रणाम करता हूँ आनन्द और चैतन्य स्वरूप हैं भक्तजन के लिये तो दया के समुद्रही हैं विभूति (आनन्द दायक वस्तुओं से पूर्ण हैं) प्रकृति के रचना से परे दिव्यरूप हैं स्थिर बिजुली और मेघ के समान जुगल मूर्त्ति भक्तजन के मन मोर को सदा आनन्द देते रहते हैं और दोनो एक तत्व हैं ॥६॥

मू० अनङ्गशेखर छन्दः

बिधोश्वरादि देव सेव्यमव्ययं परस्वरूपमद्भुतं निजं हि दर्शयस्व मे परेश हे । सुनस्त मौक्तिका सुरेज्य सेवितं तबाननेन्दु सोम मापितुन्तु प्रार्थयाम्यहं ममेशहे ॥ निरञ्जन प्रपञ्च भिन्न निष्कल स्वबोधमन्नमामिते पदाम्बुजं प्रभो जगन्निवासहे । सुलोल कर्ण भूष बिम्ब काम मोन के लिगण्ड बिम्ब रागदाधरामृत प्रद प्रभासहे ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थ

हे सर्वोत्तम श्री राघव ब्रह्मा और शिवादि देवतों का पूज्य और प्रकृति से परे जो आप अखण्ड स्वरूप हैं वही अपना दिव्य रूप मुझको दिखलाइये आप के सुन्दर नाक में बुलाक का मोती लटक रहा है सो मानो शुक्राचार्य्य हैं अमृत के लोभ से मुख चन्द्रमा की सेवा कर रहे हैं हे मेरे स्वामी मेरी भी प्रार्थना है कि वही मुखचन्द्र की माधुरी मुझ को भी मिले और आप प्रकृति के रचना से पृथक हैं अपने अखंडरूप तत्व को आपही जानते हैं हे प्रभो अन्तर्यामी (पर कीयमानसज्ञाता) मैं आप के चरण कमल मे प्रणाम करता हूँ ये आप के कानों में सुन्दर मकराकृत कुण्डल हल रहे हैं उनका प्रतिबिम्ब आप के गालोंपर शोभता है सो मानो नीलम के कुंड में मीनरूप कामदेव खेल रहा है आप के होठों के रंगका किंचिद्भाग पाकर बिम्ब फल रक्त वर्ण में अति प्रशंसित होरहा है आपकी मुसुकानी तो मानो अमृतही है ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूल।

सुगन्ध चिक्कनाञ्जनाभ दीर्घ कुन्तलोद्भ दिप्ति मत्किरोट भ्राजितं। मनोहरं स्मितं मुखम् यथा रवि प्रपीडिता सुधार्थ सन्मुखस्थिता निशानिसेवितुं निशा करं सुखम्। सुरांगना नरां गना समीरपाङ्गना गणे भमाल मध्य प्राप्त सोम सन्निभं शुभावहम्। विराजितं श्रियान्वितं नमामि रोम नायकं च प्रेम योग दायकं भवापह म्मुदावहम् ॥ ८ ॥

अर्थ।

सुगन्ध युत चिकने काले और लाये आप के केश के उपर प्रकाश मान किरीट शोभित है और साथ उसके आप की मधुर मुसकानी भी शोभित है सो जैसे सूर्य्य के भय से बचने के निमित्त अमृत प्राप्त करने के लिये रात्रि चन्द्रमा के सनमुख स्थिर खडी है। प्रगट होवे कि सूर्य्य के समान प्रकाश मान मणि जटित किरीट हैं राती रुप काला केश है यो निचे लटक कर मुखचन्द्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के ओर झुक रहे हैं अद्भुत रूप शोभा है। जैसे तारा गण के मध्य चन्द्रमा शोभते हैं वैसेही देव कन्या, राज कन्या और नाग कन्याओं के समूह में श्री जनक कुमारी के साथ श्री रघुनन्दन विराजते हैं शुद्ध रूप सुखदायक हैं। केवल प्रेमही से भक्त जनको प्राप्त होते हैं। जन्म मरण रूप जगत् का दुःख दूर कर्त्ता हे श्री राम नायक आप को नमस्कार ॥ ८ ॥

मूल। सुधा निधि छन्द.।

सम्पति प्रपूर्ण वृक्ष गुल्म वल्लि भिः सुशोभिते दिव जालिनाद नादिते प्रमोद कानने पि। सौर भादि युक्त वात केलि जोर्म्मि मत्स-रान्तिके मिलिन्द वृन्द गुञ्जिते प्रसून मण्डपे पि। राग रक्त वाम मण्डिते वितान छत्र चामरादि वेश सज्जितौ सुभूषितौ शुभासने पि। संस्थितौ नमामि जानकी रघुद्वहौ कृपोन्वितौ परौ मनो द्विरेफतां प्रयातु मेह वां पदाम्बुजेपि ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थ—पत्र पुष्प और फल एही सम्पत्ति से पूर्ण वृक्ष, गुच्छ और लताओं से शोभित प्रमोद वन में अनेकन जाति के पक्षियों के झुण्ड वृक्षों पर बैठे चहचहे शब्द कर रहे हैं। सीतल मन्द और सुगंध वायु के संचार से मणि निर्म्मित सरोवर मे तरंगे उठ रहे हैं। सर के तट पर सुन्दर सुगंध फूलों के मण्डप (बंगला) शोभित हैं उसपर सुगंध और रस के लोभी भौंरों के झुंड झंकार शब्द कर रहे हैं। भीतर (मंडप) मेमेम के मद से छकी हुई सेवा में तत्पर सहचरी गण रत्न जटित छत्र धारण किये श्री जानकी वलभ के पीठ की ओर खड़ी हैं कोइ चंवर ढारती हैं और कोइ पान दान लिये सेवा में तत्पर हैं। मणि निर्म्मित विलान (शाम्याना) के भीतर तकिया युत कोमल गादी पर मणिमय किरीट और कुंडलादि भूषण भूषित प्यारी और प्रियतम विराजमान अपनी शोभा और सुन्दरता से कोटिन रतिपति को लज्जित करणे वाले हे करुणा कर आपको नमस्कार है नाथ दया दृष्टि द्वारा मेरे मन को भौरा वनाकर अपने चरण कमल पर स्थिर कर रखिये एही विनय है ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूल।

मल्लिकादि शुभ्र पुष्प छादिते लता गृहे मरन्द मत्त रेणु राग रक्त भृंग गुञ्जिते च मञ्जु वञ्जुलोद्य माल्य चन्द्रिका किरीट कुण्डला न्युतौ मनो भवात चम्पकाभ वाम पुंजिते च दम्पतो परस्पराननेन्दु दर्शनाय दृक्च कोर योग तत्परौ च प्रेम विह्व लस्थितौह शम्भु हृद्ध देगतानिवां पदाम्बुजानि सेवितुं मनो द्विरेफतां प्रया तु मेनमामितौह ॥ १० ॥

अर्थ।

प्रमोद वन में सरोवर के तट पर बेला आदि सुन्दर और सुगन्ध फूलों का लता कुंज है उस फूलों का रस पान कर के भौरे मतवाले बन कर उन फूलों पर गिरने और लेटने से उनके अंग में फूलों की धूली लिपट जाने से चित्र रंग के बनगये है और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुंजार शब्द कर रहे हैं कुंज के भीतर प्रेम के रस से भरी चम्पक वर्णी सहचरीयों के मध्य मे रत्न जटित बेंदी (बेंच) पर युगल रूप श्री जनक नन्दिनी। रघुनन्दन शोभित हैं सुन्दर गुलाब के फूल से सज्जित माला चन्द्रिका और किरीट आदि भूषन भूषित प्रिया प्रियतम परस्पर अपने नेत्रों को चकोर बना कर मुख चन्द्र की माधुरी का पान करने में प्रवृत्त हैं प्रेम रूप मद से छके और उसके आवेश से विव्हल हे कृपालू श्री सीता पती आप का चरण कमल जो गिरिजा पति के हृदय सरोवर में शोभित है उसका रस पान कराने के लिये मेरे मन को भौंरा बना कर वहां पहुंचा दिजिये हे प्रभो आप को वार २ प्रणाम है १०।

तरल नयन छन्दः

कुसुम सर धर मद हरण। स्मित वदन पर मुद भरण। जन हृदलि सर सिज चरण। भव भव भय हरण शरण ॥१॥ मन सिज मनु सदन बचन। तपन मपनय विधु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बदन ॥ सरसिज नयन शुचि वरण प्रणत शरण जुगल चरण ॥ १२ ॥

अर्थ।

हे शरण (रक्षक) कामदेव के अभिमान का दूर करनेवाला मुसुकान युत आप का मुख दर्शक को ब्रह्मानन्द देनेवाला है आप का चरण कमल कृपा पात्र प्रपन्न जन का मन भौंरा के निवास का स्थान हैं तथा जन्म और मरण रूप संसार का भय छोड़ानेवाला है ११ हे राघव आप का वचन कामदेव के मन्त्र का घर है (अर्थात् आप की बोली सुनने सेही नायिका गण के हृदय में कुसुम सर का सर विध जाता है) हे कृपालू ताप नाशक चन्द्रमा के समान अपना मुख दिखलाकर मेरे हृदय से संसार के ताप को दूर कर दीजिये। हे सुन्दर वर आप का नेत्र जो कमल के समान सुन्दर हैं वह नायिका गण कों शृंगार रस का संचार करने वाला है और आप जुगल स्वरूप का चरण प्रणत जन का शरण है। १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोदक छन्दः

नित्य परात्पर हे विगत कृय व्यापक ब्रह्म निरञ्जन स श्रिय॥ मंगल रुप प्रपन्न सहायक। नौमि तमाघ्रि युगं रघुनायक १३ श्रोवद नाब्ज मिलिन्द विलोचन। मोहनिशा रवि शोक विमोचन॥ अंघ्रि युगंघ्रि नमामि सदो तव। दोन जनं करुणा कर मामव १४

अर्थ।

हे रघुनायक आप के चरण को मैं सदाहि प्रणाम करताहूं आप नित्य स्वरुप उत्तम से भी उत्तम और प्रकृति केकार्य्य से पृथक हैं अन्तर्य्यामी रुपसे सर्वत्रही दीखे जाते हैं और सब से बड़े हैं माया के विकार से रहित और श्री जनक नन्दिनी के सहित सदाही आप शोभते हैं हे मंगल रूप आप प्रपन्न जन के सहायक हैं ॥ १३ ॥ सिया जनक जा के मुख कमल की शोभा रूप रस पान करने के निमित्त आप के नेत्र भौंरे हैं मोह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात्रि को दूर करने के लिये आप सूर्य्य रूप हैं, हे शोक विमोचन आप के चरणों को सदाही मैं प्रणाम करता हूं हे करुणाकर संसार का जन्म मरण रूप दुःख से पीडित हूँ मेरी रक्षा कीजिये। १४।

मूल। विद्युन्माला छन्दः

श्री जानक्या शाकं रामम् वंदेहं वैपूर्ण कामम्
निःसारे संसारे सारं श्री भू लोला यैका धारम् ॥ १५ ॥
वेदैर्जेयौ लोके व्यासौ भक्त्याध्येयौ प्रेम्ना प्राप्तौ।
बन्दे हन्तौ सीतारामौ नित्यानन्दौ शोभा धामौ ॥ १६ ॥

अर्थ।

इच्छा रहित कामनाओं से परिपूर्ण श्री सीता रामचन्द्र को मैं प्रणाम करता हूँ सारहीन इस संसार में हे श्री राघव एक आपही सार रूप हैं श्री देवी (त्रिपाद विभूति की अधिष्ठात्री) भूदेवी (रासादि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लीला की स्वामिनी) और लीला देवी (अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड की उद्भव, स्थिति और प्रलय दिखाने वाली) का मुख्य अवलम्ब आपही हैं। हे सीता रामौ आप वेदही के द्वारा जाने जाते हैं अन्तर्जामी रूप से आप सर्वत्र फयलर हे हैं।

केवल भक्तिहि के द्वारा आप ध्यान में आते हैं और प्रेमही से मिलते हैं आप आनन्दमय और शोभा के सींव हैं हे यूगल रूप श्री सीताराम आप को प्रणाम करता हूं ॥ १६ ॥

मू० भुजङ्ग प्रयात छन्दः

गतम्बाल कालँ प्रियं क्रोडयातं । वयो नायिका राग साद्धं म्प्रभो हे ॥ जरा चिन्त या मां विहायाशु दूरम् । निजांध्रू म्बुजे भृङ्ग चिन्ताम्बि धेहि ॥ १७ ॥

हरे दीन बन्धो नमस्ते ऽखिलेश । प्रपन्नार्त्ति हृर्त्ता सदा हृद्म दम्मे ॥ प्रफुल्लोत्पलाभ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्मितास्येन श्री मत्प्रभो भूषितं कुर्व्वं योध्या बिहारी ॥ १८ ॥

अर्थ ।

हे प्रभो बाल अवस्था जो सब किसी की प्यारी थी सोतो खेल खूँदही में चली गई फिर आइ जवानी सोभी स्त्रियों के जाल मे बेहाल करके निकल गई हे भक्त सुख दाता अब तीसरी कटावन सूरत घृणा की मूरत यह वृद्धावस्था ये बोलाये चलाये पहुंच गई है और चिन्ता के समुद्र में डुबा रही है हे दीन हितकारी इस बुढ़ापे के चिन्ता से निकाल कर शीघ्र मुझ को दूर फेक कर अपने चरण कमल के सेवा मे बसावने के लिये भौरा की सी चिन्ता मुझको द दीजिये हे जगदीश्वर आपको नमस्कार है। आश्रित का क्लेश छोड़ाने वाला और पालन कर्त्ता आपही हैं हे शोभामय खिले हुए कमल के समान मुखकान युत अपने मुख से मेरे हृदय के सरोवर को सदा शोभित करते रहिये क्योंकि आप अयोध्या बिहारी हैं और मेरा नाम अयोध्या प्रसाद है ॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मू० कुसुम बिचित्रा छन्दः

रसिक मनो लि प्रिय मकरन्दम्। भव निधि मग्नोद्ध रण सुपोतम् ॥ बिधि शिव बन्द्यं प्रणत निकेतम्। तब पद कञ्जं रघुवर बन्दे ॥ १९ ॥ तरुण सुवासा हृतजन चित्तं बिरति युतानां सुख कर वित्तम् ॥ शरण गसन्मानस सर हंसम्। तव पद कंजं रघुवर बन्दे ॥ २० ॥ भव भय खिन्नं मख ब्रत भिन्नं विषय विलीनं सजन विहीनं ॥ अह मित युक्तं तव रति मुक्तम्। अपि शरणे ते गतमव दीनम् ॥ २१ ॥

अर्थ।

हे रघुवर आपके चरण कमल में मैं प्रणाम करता हुं रसिक (भक्त) जन का मन भ्रमर को आप के चरण कमल की धूली परम प्यारीहै। संसार समुद्र में डूबे जीव को उद्धार करणे के लिये वही आप का चरण जहाज है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मा और शिवादि देवतायों का पूजने योग्य आपही का चरण है और शरणागतजीव के लिये नित्य के निवास का गृह है १९ आप के चरण कमल का दिव्य सुगन्ध मे प्रपन्न जनका मन भ्रमर लिपटाही रहता है वैराज्ञमान जन को सुख देने वाला आपका चरण उत्तम धन है हे राघव शरण प्राप्त जीव का उत्तम हृदय रूप सरोवर में निवास करणे वाला हंसरूप आप के चरण कमल को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २० ॥

हे नाथ जन्म मरण रूप संसार के दुःख से यद्यपि मैं दुवला हो रहा हूँ तौभी यज्ञ व्रतादि पुण्य कर्म्म से जुदा ही रहता हूँ और इन्द्रियों के विषय मे गर्क हूँ किसी महात्मा का सतसङ्ग भी नही है पर अपने वर्ण विद्या और धनादि के अभिमान से भरा रहता हूं और भी मेरी दीनता यह है कि आपके चरण कमल की प्रीति से छुटा हूं परन्तु हे दीन बन्धो यही एक आशा है कि आप के चरण के शरण मे अवश्य पहुंच गया हूँ इसलिये इस दीन की रक्षा कीजिए ॥ २१ ॥

मूल दोहा छन्दः

नान्य स्पृहा रामदीय हृदि । भवतु रघुपते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जात् ॥ अनन्य भक्तिं निर्भरां। मेदेहि तथा पात् ॥ २२ ॥

कामादि दोष रहितश्च। कुरु हृदयं मम नाथ ॥ करुणया किल निज भक्तया। भूषितं ह रघुनाथ ॥ २३ ॥

अर्थ।

हे रघुपते मेरे हृदय मे दुसरी श्रद्धा कदाचित भी नही होवे एक अपने ही भरोसे में मुझ को रखकर अपनी अनन्य भक्ति देकर मेरी रक्षा कीजिये ॥ हे नाथ श्री रघुनाथ काम क्रोधादि विकारों को निकाल कर कृपा पूर्वक अपनी भक्ति को ही स्थापित कर के मेरे हृदय को शोभित कर दीजिये ॥ २३ ॥

मू० प्रेम सुधा विन्दुभिधं च। स्तोत्र हि पठिष्यन्ति ॥ भुक्तिं भुक्त्वा श्री पदे। ऽमृते ते व्रजिष्यन्ति ॥ २४ ॥

6530.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थ।

श्री सीतावर के चरण कमल मे प्रेम का उत्पन्न कराने वाला सुधा विन्दु नामक स्तोत्र को जो उपासकजन मन लगा कर पढ़ेगे सो इस लोक में सुख का भोग करके सर्वोत्तम मुक्ति पाकर श्री जानकी नाथ के नित्य लीला का स्थान तृपाद विभूति मे प्राप्त हो जायेंगे ॥ २४ ॥ इति चित्र स्वाद के प्राप्ती मे रुचि की वृद्धि होती है सुतरां तस्मात आगे देश भाषा से चित्रित करि के छन्द लिखे जाते हैं। यथा सार्दूल विक्रीड़ित छन्दः।

सौ वर्णालय भूमि रत्न न रची भा कोटि सौरी मधी। प्रासादावलि चारु चारि दिशि सो शोभा समा की थलो॥ मध्ये मण्डप कल्पवृक्ष तल मे पद्माष्ट पत्रस्थिति। राजें कर्णिक ताहि काम रति जि च्छ्री राम सीता तथा ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पृष्टे पत्र खडो सखी कर धरी छत्रं विशालं वरम् । तस्या दक्षिण वामगे व्यजनं द्वै वालें झलें प्यार से ॥ गौराङ्गो सुभगे तथो द्वि वगले ढारें वरे चामरे । सेवें दम्पति पान पात्र करलै श्यामे युगे पाइवंगे ॥ २ ॥

अर्थ ।

मणि रचित कनकभवन की भूमि मे कोटिन सूर्य्य के समान प्रकास फैल रहे हैं चारो दिशि कत्तोर से सात २ खण्ड के मणि भूषित विमान नामक मन्दिर हैं उसके कलश कंगूरण पर नृत्य के भाव से रत्न मय कृत्रिम मोर मुख मे मोती का लर लटकाये खड़े हैं और ध्वजा, पताका, परदा,गज मुक्त के बन्दनवार और जाल शोभित हैं प्रतिखण्ड के कमरे मे सोने, चांदी और रत्नन की वेदी (कुरसी वा वेंच) आदि सौज सज्जित हैं प्रति द्वार मणि दीप युत स्वर्ण कलश, कदलीस्तंभ, सरो और नारिअर के वृक्ष शोभा कर रहे हैं मध्य भूमि मे कल्प वृक्ष के समीप रत्न मय स्वर्ण मण्डप (बङ्गला) मे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रत्न जटित स्वर्ण का अष्टदल कमला कार बड़ा आसन है मध्य में कर्णिका पर रत्न भूषण भूषित दिव्य वसन सज्जित कोटिन रति काम कमनीय स्वरुप श्री जानकी वल्लभ विराजमान हैं पीछे के एक पखरी पर दिव्य क्षत्र धारण किये १ सहचरी आनन्द युत खड़ी है उनके दहिने बायें के दोनो पत्ते पर दो सुन्दरी खड़ी रत्न रचित पंखा झल रहीं हैं उन्के दोनों बगल २ गौरी रत्न निर्मित चंवर ढारतीं हैं फिर दो श्यामा उनके दोनो ओर पान पात्र धारण किये खड़ी जुगल किशोर को पान खिलावतीं हैं ॥ २ ॥

मू० शिखरनी छन्द।

प्रिया प्राणेशाग्रे कमल दल मध्ये सहचरी
खड़ी सेवें श्री को शुभ इतरदानी करधरी ॥
तथा बह्वी दासी रति शचि रमा सारद समा
समीपै लैसैवैं मुद जनक सामग्रि सगरी ॥३॥
झरोखों से नव्या मधुरमदभव्या शशिमुखी।
लखी शोभा सोभा रतिसर निमग्ना भइ सुखी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परा मध्या प्रौढ़ा चमकि चपलासी नटति हैं
तताद्या वाद्यों से गुण गणन गाके मुदति हैं

अर्थात

दम्पति के सन्मुख कमल के पत्तरी पर १ नागरी इतर दानी लिये खड़ी सेवा मे तत्पर है इनसे अधिक कमल सन के चारो दिशि रति, शचि लक्ष्मी और सरस्वति के समान असंख्य सखि और सहचरी सुखद क्रीड़ा की सामग्री तथा वीनादि विचित्र वाद्य धारणकिये जुगल स्वरुप के सेवा मे उत्साह युत खड़ी हैं चारो दिशि के झरोखों से मधुर मदवाली (मुग्धा) अनेकन चन्द्रमुखी दम्पति के समीप आकर प्रकासमान वह सोभा देखि प्रीति मे आसक्त हो सुख युत स्थिर ठहर जाती हैं पुनः मध्या नायिका झरोखों से बिजुलीकी चमक सी उतर आती और लौट जाती हैं और प्रौढ़ा दम्पति के सन्मुख आकर नृत्य करतीं और तत (वीनादितारका) घन (कंसा कांयजीरादि) सुखिर (वंशी आदि) और अनद्ध (चमड़ा का मृदंगादि) बाजा बजाने के साथ जुगलस्वरूप का दिव्य गुण गाकर के आनन्द में मग्न होती हैं ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मू० अनङ्ग शेखर।

जगत्करादि देवतेश गुप्त भेव नित्य गेय सर्व ध्येय निःप्रतीम रूप श्याम राम हे। निरञ्जन प्रपंच भिन्न निष्कल स्वबोध युक्त हे निराश्र या श्रिताश्रय प्रमोद धामहे॥ कराल काल वारणत्र केशरी भवाब्धिमग्न पोत शम्भु वक्र चन्द्र प्राप्त सोम रामहे॥ नमामिते पदाम्बुजं प्रपन्न शं प्रदं रमादि शक्ति वन्दिता प्रिया सुशोभितांक वामहे॥ ५॥ किरीट भास भास्करस्यभो निवेदनाय केश रात्रि निम्न जाय चन्द्र देव से जना रहे। कपोल साफजारि मध्य मील कर्ण भूष विम्ब स्वोष्ट विम्ब चक्षु काम बाण से सजा रहे॥ बुलाक नाक मुक्त पास हास्य योग शोभ होत मानु शुक्र सोम लोभ सोम को मना रहे॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनोर मोह नैश नाशनं तवाँघ्रि प्रेम पद्मिनी विकासनं दयार्क तेहमे वना रहे।६।

अर्थ।

हे श्याम सुन्दर श्री राम चन्द्र आप ब्रह्मादि देवतों के पूज्य हैं कोई भी आप के भेद को नही जानता है सदाही शिव जी आप के अनूप रूप का ध्यान और दयादि दिव्यगुणों का गान करते रहते हैं हे दिव्य रूप आप प्रकृति की रचना से पृथक् हैं हे अखण्डात्मन् अपने स्वरुप को आपही जानते हैं हे निराश्रय आप किसि का आश्रा नहीं रखते हैं और जो कोइ आप का आश्रा थाम्हता हैं अवश्य उसका सहायक आपही होते हैं हे परमानन्द स्वरूप यह कलिकाल रूप भयानक हाथी के लिये आप सिह हैं अर्थात् आप के भक्त को कलिकाल का भय नही रहता है संसार समुद्र में डूबते जन के लिये आप जहाज हैं आप का नाम अमृत रूप है शिवजी के मुख चन्द्र में निवास करता है लक्ष्मी आदि शक्तियों की स्वामिनी प्यारी श्री जानकी आप के वाम भाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में शोभित हैं शरणागत जन को कल्याण करनेवाले आप के चरण कमलों को प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

हे श्री रघुनाथ आप के सिर पर रत्न निर्मित मुकुट प्रकाश मान सूर्य्य रूप है और आप का अलक जो शोभित है सो मानो काली रंग की राती है वह सूर्य्य के भय से अमर होनेको अमृत के चाह से मुख चन्द्रमा की प्रार्थना कर रही है हे प्रभो मेरा भी विनय है की आप अपना मुख चन्द्र को दिखला कर संसार के भय से मुझको बचाइए हे सुन्दर चतुर चूडामणि मणि के तुल्य साफ आप का दोनो गाल है उसमें कुण्डल की परछाही परने से बोध होता है कि नीलम के कुण्ड में मानो कामदेव मछली रूप से तैररही है। आप के सुन्दर लाल ओठें मानो पके कन्दूरी के फल हैं और आप की आंखें काम के बाण केसे शोभ रहे हैं हे राघव आप के नाक में बुलाक का मोती डोल रहा है उसका प्रकास और मुसुकान युत मुख चन्द्र का विकास इनका साथ होना जान पड़ता है कि मानो शुक्राचार्य्य अमृत के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चन्द्रमासे विनय कर रहे हैं हे हरे प्रपन्न जनके हृदय का मोह रूप अंधियारी का नाश और आपके चरण का प्रेम रूप कमल को प्रफुल्लित करने वाला आप की दया रूप सूर्य्य उदित बने रहें तो मेरे लिये अति आनन्द है ॥ ६ ॥

मू० शिखरिणी छन्द

तवास्मि प्राणेश प्रभुवर परात्मन् गुणनिधे ।
करीमा हे बन्दे परवर वो खालिक रहमकुन्
जगत्सिन्धो मित्रात्मज अहभयाद्रक्षक तु ही
कृपालो दीनोहं पद शरण गस्तेऽवतु मरा ७

अर्थ ।

हे प्राण नाथ श्रेष्ट सामर्थ वाले परमात्मा और दिव्य गुण के समुद्र मैं आपका हूं हे दया करणे वाले सब के पालक सप्तलोकादि के उत्पन्न कर्त्ता मुझ पर दया कीजिये संसार समुद्र के कटावन जन्तु घरियाला दि के रूप मित्र पुत्रादि के मोहसे मुझको बचावने वाले एक आपही हैं हे दया मय मैं दुखीहूँ आप के चरण के शरण में पहुंच गया हूं मेरी रक्षा कीजिये ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मू०

मरोंचे के हस्तीं दर जगति वाऽमुत्र सकलम् तथा योहं तत्ते चरण कमले दाखिल कृत म् ॥ गुनाहाना साठ्यो ह् यगति रपि तद्वोर रहितः । रसाई वाहिद्वां दिगर न मरा साहब कसे ॥ ८ ॥

अर्थ।

मरा, उँचे के, हस्ती, ईं दर, जगति मेरा यो यो कुछ के है इस जगत में या परलोक का यो होय सो और उसी रीति से यो मैं हूं सोभी यह सब आपके चरण कमल मे समर्पण किया है हे प्रभो मैं पाप धन का धनी हूँ और निश्चय जानिये कि आप के दरबार के सेवाय कहीं भी मेरा गुजर नहीं है अपनी भलाइ का कोइ भी उपाय नहीं जानता हूँ मेरा पहुंच एक आप युगळ स्वरूप ही तक है और सेवाय आप के दूसरा कोइ भी मेरा स्वामी नहीं है ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मू०

पनाहे वां प्राप्तं ध्रुव गम जदे हिसं रिपु से। प्रपन्नोहं त्वासी करम कुरु कारुण्य जलधे ॥ प्रसादं कुं दासे मयि गुनह बारे रहमराट्। खता वख्शिं दे है तु दिगर न दानं हित कसे ॥ ९ ॥

अर्थ।

निश्चय करिके मैं विनय करता हूँ कि हे प्रभो विषय रुप शत्रु के द्वारा पीड़ित हो के आप दोनो स्वरूप के रक्षा में मैं पहुंच गया हूं हे दया के समुद्र मैं पापी हूं परन्तु आप के शरण में पड़ा हूं मुझपर कृपा कीजिये मेरे सिर पर पाप का बोझ है आप दया के राजा हैं इसलिये इस दास पर प्रसन्न हूजिये क्योंकि आप पाप के नाशक हैं मैं सेवाय आपके दूसरे किसी को अपना हित नही जानता हूं ॥ ९ ॥

मू०

तवास्मि श्री सीता वर हि दिल फेलेन वच सा। तवास्मि श्री सीते भगवति युवां मां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरगती ॥ नमन्मानिन्दोसी गुनहहर वां तुल्य न कुजा । बिचार्य्यैते मामू पस कुरु ;चुना खाहिशतथा ॥ १० ॥

अर्थ ।

हे सीतापते यह ठीक है कि मन, बचन और कर्मसे मैं से आपका हूँ हे सीते भगवति मैं आपका हूं आपही दोनो स्वरुप तक मेरा प्रवेश है और आप के साथ मेरा एक सम्बन्ध यह है कि मेरे समान पापी दुसरा कोई भी नहीं है और पाप का नाश करने वाला आप के सदृश दूसरा कोइ नही है इसी मामले का विचार करिके फिर जो इच्छा होय सो कीजिये ॥ १० ॥

मू०

गतिश्चैको मे त्वंहि दिगर न कुत्रापि शरणम् । रहोगा तस्मात्वं कुरु रहम सिंधो रहम मे ॥ करीमा दाशोहं शरणगत वंदा तव सदा । खता वख्शन्देत्वँ गुनहपर मां पाहि रबहे ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थ

मेरा पहुंच एक आपही तक है और यह भी ठीक है कि दूसरा कहीं भी मेरा ठेकाना नहीं। हे दयामय इसलिये आप मुझ पर दया कीजीये क्योंकि आप कृपा के सागर हैं हे कृपालो मैं आप का दास हूं आप के शरण में गिरा हूं सदा आपका आज्ञा कारी बना हूं आप अपराध के क्षमा कर्त्ता हैं और मैं अपराधी हूं हे राम मेरी रक्षा कीजिए॥ ११॥

मृ०

निग्रह दार साध्वं हि हे दीनबंधो। दया पूर्ण दाशात्तिं हन्ता प्रभो हे॥ खता मुक्त कुर्मे कदम्भक्ति दानम्। गतोहं पनाहे तवानन्दसिन्धू॥ १२॥

हे दुखियों के ..... आप मुझ पर दया की दृष्टि रखिए क्योंकि आप दया मय हैं हे प्रभो आप सेवक का कष्ट हरते ही हैं इस लिये मुझ को अपराध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से पृथक कर दीजिये और अपने चरण की भक्ति दे दीजिए हे आनन्द सिन्धो मैं आप के शरण में पहुच गया हुं ॥ १२ ॥

मूल दोहा छन्दः ।

विनय ध्यान सुख सिन्धु कै,
सुधा बिन्दु इक लाय ।
पढत ताहि श्री पति कृपा,
भुक्ति मुक्ति जनपाय ॥ १३ ॥
मनन करन हरि गुण गणन,
लखन युगल रस राज ।
सुधा बिन्दु सोत्सह लिखी,
लखी सुजन कै साज ॥ १४ ॥

अर्थ ।

श्री जानकी बल्लभ का रहस्य सुख जो अमृत का समुद्र रूप है उसका एक विन्दु के समान यह सुधाविन्दु नामक स्तोत्र है इसके पाठ करने तथा अर्थ का विचार करने से श्री पति की कृपा द्वारा उपासक जन को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जुगल रूप के ध्यान का सुख और संसार में सुख का भोग प्राप्त होता है अंत में जन्म मरण रूप बन्धन से मुक्तिपाकर नित्य विहार के सेवा में यह जीव पहुँच जाता है भक्त जन का क्लेश हर्त्ता श्री रघुनन्दन का दया दिव्य गुणों का स्मरण करने तथा जुगल स्वरूप का उत्तम रहस्य देखने के लिए सुजन महात्मा का उत्तम स्वभाव के भरोसे यह सुधा बिन्दु सोत्सह लिखा १४

इति श्री मिश्र गोपीनाथात्मजा योध्या प्रसाद
कृतंसु धाबिन्दु संज्ञकं स्तोत्रम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवशि देखिये देखन योगू ।
उत्तम गुण वरणत सब लोगू ॥

प्रायः दीख पड़ता है कि रोगी के लिये चिकित्सक गण नुसखा देकर निश्चिन्त हो जाते हैं अधिक ऐसे भी वैद्य हैं कि रोग निश्चय करि रोगी को कहला देते हैं कि तुम्हारे लिये दवा बनाने में इस कदर रुपये खर्च होंगे सुतरां गर्जवस रोगी रुपये देकर दवा की इन्तजारी करने लगा वैदजी जितने अर्से में दवा तैय्यार करके रोगी को देवेंगे उस समय पर्य्यन्त रोग की वृद्धि से रोगी का क्लेश अवश्य बढ़ताही रहेगा इस प्रकार की छति से बचा कर रोग का प्रतिकार शीघ्र प्राप्त होने के निमित्त इस आर्य्यचिकित्सालय में बहुत तरह के रस, धातु, तैल, चूर्ण, गोली और अवलेहादि तैय्यार रहते हैं जो समय पर रोगी को मिलता है ।

यदि वैद्यगण चिकित्सा करने के लिये तैय्यार कोइ औषधि लिया चाहें तो उचित मूल्य द्वारा रसादिक औषध प्राप्त कर सन्तुष्ट हो सकेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशेषद्रष्टव्य ।

प्रायः पचीस वर्ष से भी अधिक दिन व्यतीत हुये होंगे कि " आर्य्यचिकत्सालय " नाम की औषधालय, हमलोगों ने स्थापित की है और बराबर दीन दुखियों को प्रातः काल में बिना मूल्य के औषधियां दी जाती है ।

आर्य्यग्रन्थानुसार हरएक प्रकार की औषधियां तय्यार रहती है विशेष और परीक्षित दवायें भी कुष्ट, प्रमेह, हैजा, दमा और खांसी की दवायें सदा तय्यार रहती हैं । जिनका पूरा हाल पत्र लिखने पर ज्ञात होगा " काली " नाम की शीतज्वर का दवा जो हमलोगों के औषधालय में बनी है गुण में कुनाइन से बढ़ा चढ़ा है कुनाइन अंत में बहुत कुछ बुराइ प्रगट करके रोगी क तंग करता है परंतु 'काली' उन दोषों से रहित है वरन् कुनैन यदि पारी के ज्वर को रोकने में कभी निष्फल होवे तो हो सकता है परन्तु 'काली' कभी निष्फल नहीं जाता ।

अधिक समाचार जानने की रुचि होवे तो पत्र लिखें

आनन्दी प्रसाद मिश्र

पीपरपांती—गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.